International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2024; 4(1): 23-26
www.educationjournal.info
Received: 09-12-2023
Accepted: 10-01-2024

अरुण कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अनिल कुमार शुक्ल
प्राचार्य, माँ अष्टभुजा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मऊगंज जिला, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अरुण कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. अनिल कुमार शुक्ल

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12 छात्राएं शहरी क्षेत्र, 12 छात्राएं ग्रामीण क्षेत्र के अर्थात कुल 1296 छात्राओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर है। महिलाओं को समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध करना चाहिए, कन्या जन्म पर दुःखी नहीं होना चाहिए, बूढ़े माता–पिता की सेवा करना, महिला सम्बन्धी मुद्दों पर उनको परामर्श देना चाहिए। इनका संभावित कारण हो सकता है कि ग्रामीण छात्राओं का पारिवारिक परिवेश संभवतः परम्परवादी है, रूढ़ियों में विश्वास करता हो। इस कारण ही उनमें जागरूकता के इस आयाम पर अभिमत न्यून व्यक्त है। सार रूप में कहा जा सकता है कि इस आयाम पर परिवेश का प्रभाव दर्शित है।

कूटशब्दः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र, उच्चतर माध्यमिक स्तर, छात्राएं, महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयाम।

1. प्रस्तावना
शिक्षा एक ऐसा माध्यम होते हैं जिससे किसी भी विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करके अपने बौद्धिक क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है। एक शिक्षित नारी अपने बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा प्राप्त करके अपने अधिकारों को बेहतर ढंग से समझ सकती है और उसका उपयोग कर सकते हैं। संसाधनों तक पहुंच कर उन संसाधनों का बेहतर ढंग से उपयोग कर सकती हैं। अपने व्यक्तित्व विकास को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के माध्यम से एक नारी उपयोग कर सकती है। शिक्षा के माध्यम से नारी अपने जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग कर सकती हैं। एक नारी शिक्षा के माध्यम से अपने अध्यात्मिक और भौतिक विकास को बढ़ावा दे सकती हैं वह आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य मामलों में भी शिक्षा के माध्यम से सशक्त और समृद्ध हो सकती हैं।

11वीं से 18वीं सदी के काल में भारत में महिलाओं की स्थिति में अत्यंत ह्रास हुआ था। महिला सशक्तीकरण सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक है। हम 21वीं सदी के आधुनिक युग में जी रहे हैं। भारत स्वयं को एक महाशक्ति के रूप में साबित कर रहा है। यह युग सूचना क्रांति व लोकतांत्रिक मूल्यों का है जहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति का हक सभी को है। समाज में महिलाओं को उच्च पद एवं उचित स्थान दिलाने के लिए उन्हें संगठित रूप में, शक्ति रूप में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। एक बालिका की शिक्षा–दीक्षा एक जलते दीपक के समान है, जो प्रकाश तो प्रदान करता ही है साथ ही इसकी लौ से अनवरत नए–नए दीपक भी जलते रहते हैं। शिक्षित महिलाएं अपने राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक अधिकारों की विषमता हेतु निरंतर आंदोलित रही है। महिला सशक्तीकरण–जागरूकता हेतु औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था का योगदान होता है। महिला सशक्तीकरण विश्व के विकास की धुरी है। छात्राऐं ही भविष्य में ज्ञानित होकर सशक्त जागरूक महिला की भूमिका निभा सकेंगी। यहीं से उनमें जागरूकता की नींव पड़ सकेगी। इसी को दृष्टिगत कर प्रस्तुत शोध कार्य उच्च माध्यमिक स्तरीय छात्राओं पर अध्ययन करना आवश्यक समझा गया। इस शोध में अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तीकरण के प्रति कितनी जागरूकता सशक्तीकरण के विभिन्न पक्षों में है यह जानने की जिज्ञासा शोधार्थी को हुई।

2. अध्ययन की आवश्यकता

21वीं सदी की महिला अब अबला नहीं सबला है। भविष्यवाणियों में 21वीं सदी को 'नारी सदी' के रूप में उद्घोषित किया गया। आज बालिकाओं और महिलाओं में शिक्षा का प्रसार हो रहा है यह एक शुभ संकेत है। शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान न होकर 'सम्यक ज्ञान', 'सम्यक दर्शन' व 'सम्यक चरित्र' विकसित करने में सक्षम होनी चाहिए। आजीविका अर्जित करने के साथ चहुँमुखी प्रतिभावन बनाने में सहयोगी होना चाहिए। प्रस्तावित शोध में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया गया है। चूंकि उच्चतर माध्यमिक स्तर को शिक्षा प्रक्रिया में मजबूत तने के रुप में स्वीकार किया गया है अतः शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना समीचीन प्रतीत होता है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 06–06 विद्यालय अर्थात कुल 54 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 12 छात्राएं शहरी क्षेत्र और 12 छात्राएं ग्रामीण क्षेत्र के अर्थात कुल 1296 छात्राओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए महिला सशक्तिकरण मापनी शोधकर्ता ने अपने आदरणीय निर्देशक महोदय के निर्देशन से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी) नई दिल्ली के नियमों को दृष्टिगत रखते हुए स्वयं से निर्मित की है। शोधकर्ता ने महिला सशक्तिकरण के समस्त पक्षों को ध्यान में रखते हुए विकल्पों का निर्माण किया। तत्पश्चात् निर्देशक महोदय के परामर्शानुसार तथा वरिष्ठ शोध विशेषज्ञों से सुधारात्मक सुझाव लिए एवं उनसे निर्देश प्राप्त कर मापनी में वांछित परिवर्तन करके प्रमापीकृत किया गया। यह मापनी केवल इस उद्देश्य से निर्मित की गई है जिससे कि विभिन्न शैक्षिक स्तर की महिलाओं के सशक्तिकरण के स्तर का पता लगाया जा सकेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], कपिल, एच.के. (1996)[2], राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010)[3], पाठक, पी.डी. (1998)[4], देशपांडे, एस., और सेठी, एस. (2010)[5], साधना, प्रीति (2021)[6], सिन्हा लोकेश्वर प्रसान (2002)[7] एवं श्रीवास्तव, अनिल कुमार (2013)[8] ने शोध विधि एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का सामान्य परिचयः जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के

दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1 : शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	शहरी	648	61.13	15.53	2.58	1.96	4.93
2.	ग्रामीण	648	56.71	16.69			

df = 1294

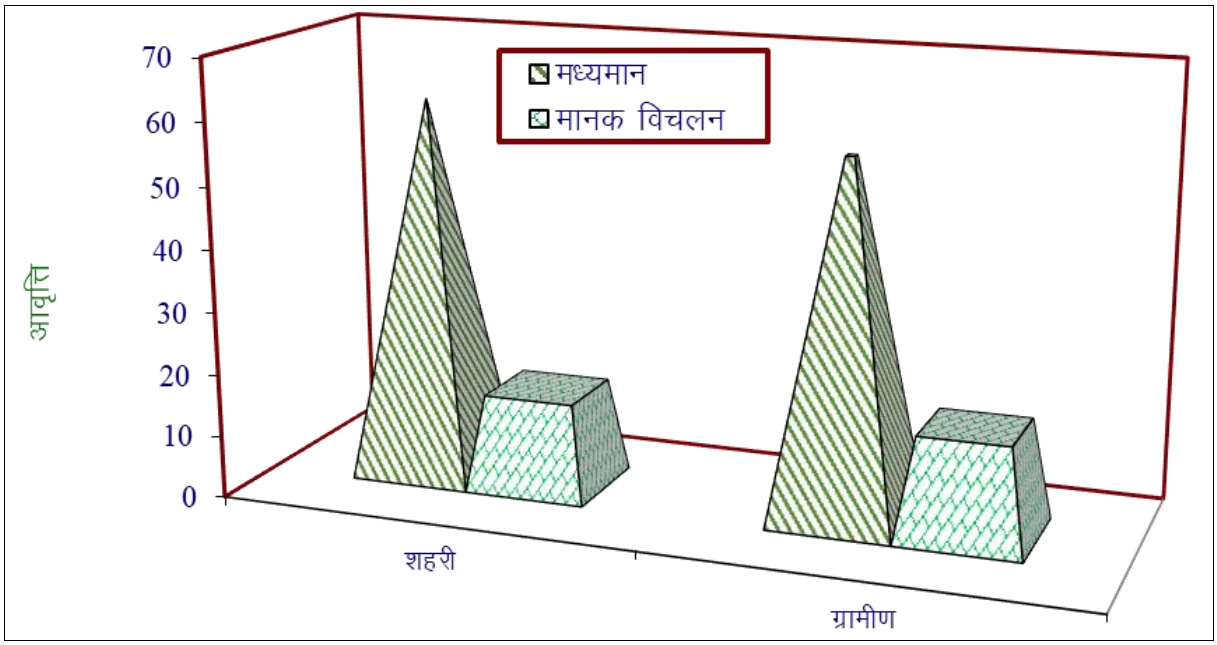

आरेख 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता का आरेखीय निरूपण

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थकता का औसत उपलब्धि 61.13 है तथा मानक विचलन 15.53 है। ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता का औसत उपलब्धि 56.71 है तथा मानक विचलन 16.69 है। इनका *df* = 1294 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 4.93 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। इसलिए निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर है। अर्थात् शैक्षिक आयामों में शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता की स्थिति ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं की तुलना में अधिक संतोषजनक है।

सारणी 2 : शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	शहरी	648	61.62	15.86	2.58	1.96	5.06
2.	ग्रामीण	648	57.01	16.91			

df = 970

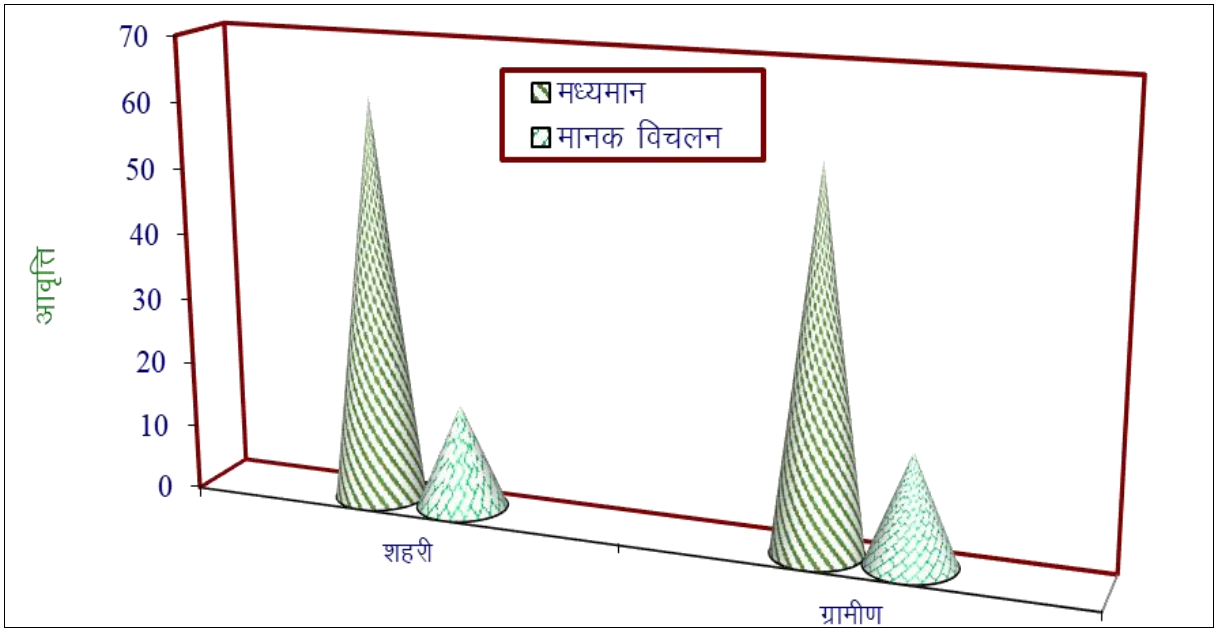

आरेख 2: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का आरेखीय निरूपण

सारणी एवं आरेख क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थकता का औसत उपलब्धि 61. 62 है तथा मानक विचलन 15.86 है। ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का औसत उपलब्धि 57.01 है तथा मानक विचलन 16.91 है। इनका *df* = 1294 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 5. 06 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है, ये प्रदत्त स्पष्ट करते हैं कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है। सामाजिक जागरूकता शहरी छात्राओं में तुलनात्मक रूप से अधिक पाई गई है। इन छात्राओं का अभिमत है कि महिलाओं को समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध करना चाहिए, कन्या जन्म पर दुःखी नहीं होना चाहिए, बूढ़े माता–पिता की सेवा करना, महिला सम्बन्धी मुद्दों पर उनको परामर्श देना चाहिए। इनका संभावित कारण हो सकता है कि ग्रामीण छात्राओं का पारिवारिक परिवेश संभवतः परम्परवादी है, रूढ़ियों में विश्वास करता हो। इस कारण ही उनमें जागरूकता के इस आयाम पर अभिमत न्यून व्यक्त है। सार रूप में कहा जा सकता है कि इस आयाम पर परिवेश का प्रभाव दर्शित है।

11. निष्कर्ष

शैक्षिक आयामों में शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक आयामों के प्रति जागरुकता की स्थिति ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं की तुलना में अधिक संतोषजनक है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश स्थित छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है। सामाजिक जागरूकता शहरी छात्राओं में तुलनात्मक रूप से अधिक पाई गई है।

12. सन्दर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010) : अनुसंधान परिचय. आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
4. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. देशपांडे, एस., और सेठी, एस. (2010) : भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की भूमिका और स्थिति, इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, 1(17), 10–12.
6. साधना, प्रीतिः "महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका", International Journal of Hindi Research. 2021;7(6):104-108.
7. सिन्हा लोकेश्वर प्रसान (2002) : महिला सशक्तिकरण और दलित महिला डॉ. आम्बेडकर सामाजिक विज्ञान। पृष्ठ 51.
8. श्रीवास्तव, अनिल कुमारः "महिला सशक्तिकरण भारतीय परिप्रेक्ष्य में", International Journal of All Research Education and Scientific Methods (IJARESM). 2013;1(1):69-75.